E-ISSN: 2582-9769

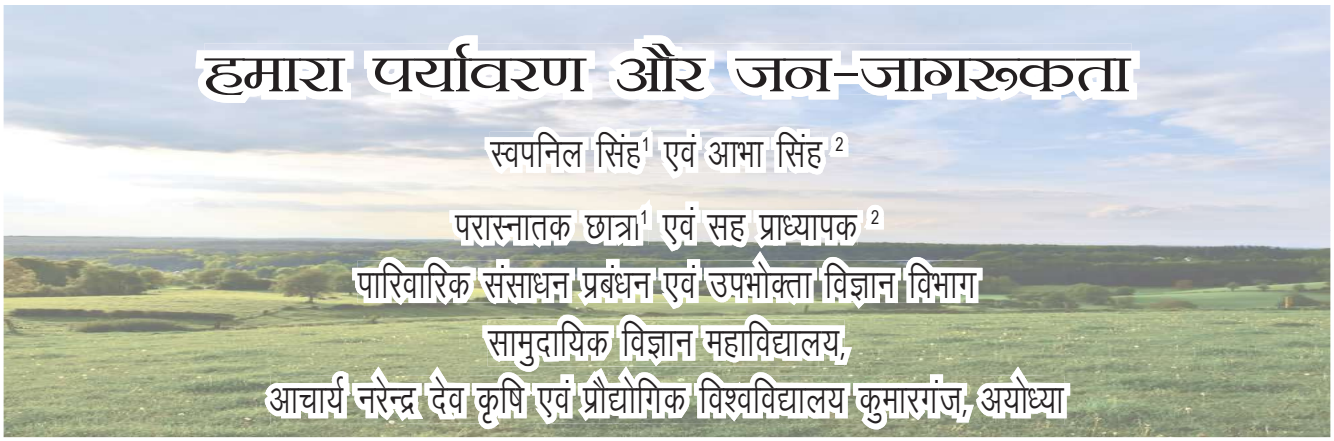

हमारा पर्यावरण और जन-जागरूकता

स्वपनिल सिंह[1] एवं आभा सिंह [2]

परास्नातक छात्रा[1] एवं सह प्राध्यापक [2]

पारिवारिक संसाधन प्रबंधन एवं उपभोक्ता विज्ञान विभाग

सामुदायिक विज्ञान महाविद्यालय,

आचार्य नरेन्द्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कुमारगंज, अयोध्या

वह प्राकृतिक संसार (जैसे भूमि, वायु, और जल) जिसमें लोग, पशु पौधे रहते है, वह पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण प्रदूषण हमारे पर्यावरण में हानिकारक और जहरीले पदार्थों की उपस्थिति को संदर्भित करता है। यह न केवल वायु प्रदूषण तक सीमित है, बल्कि जल निकायों, मिट्टी, जंगलों, जलीय जीवन और सभी भूमि जीवित प्रजातियों को भी प्रभावित कर सकता है। पर्यावरण प्रदूषण के लिए मुख्य कारण मानव उत्पन्न हैं। अपर्याप्त अपशिष्ट निपटान और इसके कूड़ेदान के परिणामस्वरूप हमारे महासागरों और जल निकायों को प्रदूषित किया गया है जिससे वे बेकार हो गए हैं और प्रजातियों के जीवन को खतरा है।

वैश्विक अनुमानों अनुसार, जीवाशम ईंधन की दुनिया की 80 प्रतिशत वार्षिक ऊर्जा है। इसके अलावा, जीवाशम ईधन के जलने से हर साल CO_2 का 21.3 बिलियन टन उत्पादन होता है, जो एक शक्तिशाली ग्रीन हाउस गैस है। पर्यावरण में CO_2 की बड़ी मात्रा की उपस्थिति से ग्रीन हाउस प्रभाव में वृद्धि होती है और इसलिए ग्लोबल वार्मिंग होती है। महानगर या शहरों में आज हम जिस हवा में सांस लेते हैं, वह जहरीले CO_2 (कार्बन मोनोऑक्साइड, CO_2 (कार्बन डाय–ऑक्साइड), नाइट्रस ऑक्साइड और CHh_4 (मीथेन) से भरी होती है। इन गैसों के साँस लेने से मनुष्यों में श्वास सम्बन्धी बीमारियाँ होती हैं। CO_2 भी एक शक्तिशाली ग्रीन हाउस गैस है जो बढ़ते ग्रीन हाउस प्रभाव और ग्लोबल वार्मिंग के लिए एक कारण है।

परिवहन उद्योग 25 प्रतिशत वैश्विक ग्रीन हाउस गैस उत्सर्जन का कारण बनता है, बाद में ग्रीन हाउस प्रभाव और पृथ्वी की औसत सतह का तापमान बढ़ जाता है। पृथ्वी की औसत सतक का तापमान लगातार बढ़ रहा है और अनुमान लगाया जा रहा है कि वर्तमान शताब्दी के अंत तक यह लग. भग 1.8 डिग्री से बढ़ जाएगा। यहां तक कि महासागरों का तापमान भी बढ़ रहा है।

पर्यावरण के प्रकारः

पर्यावरण मुख्यतः दो प्रकार के होते है।

1. भौतिक या प्राकृतिक पर्यावरण
2. संस्कृतिक या मानव पर्यावरण

भौतिक या प्राकृतिक पर्यावरणः

भौतिक पर्यावरण से तात्पर्य उन भौतिक शक्तियों और तत्वों से लिया जाता है जिनका मानव पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। भौतिक शक्तियों में तापमान, पृथ्वी की दैनिक व वार्षिक गति, भू–पटल को प्रभावित करने वाले बल, ज्वालामुखी, भूकम्प आदि शामिल किये जाते है। इन शक्तियों द्वारा पृथ्वी पर अनेक प्रकार की समस्याएं उत्पन्न होती है जिसका प्रभाव मानव जीवन पर पड़ता है तथा मानव के क्रिया कलापो पर भी अपना प्रभाव छोड़ती हैं। भौतिक तत्वों में उन सभी तत्वों को सम्मिलित किया जाता है जों भौतिक शक्तियों को तथा प्रक्रियाओं के फलस्वरूप धरातल पर उत्पन्न होते है।

संस्कृतिक या मानव पर्यावरण

मानव द्वारा निर्मित सभी वस्तुएं सांस्कृतिक पर्यावरण का अंग बन चुकी हैं। मनुष्य अपने तकनीकी के बल पर प्राकृतिक पर्यावरण के तत्वों पर अपनी आवश्यकताओं के अनुरूप बना लेता है। वह भूमि को जोतकर कृषि करता है, जंगलों को साफ करता है, सड़के रेलमार्ग व नहरें आदि बनाता है। जिससे पर्यारण का शोषण करके अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। मानव द्वारा बनाई गई समस्त वस्तुएं जिस संस्कृति को जन्म देती है उसे मानव निर्मित संस्कृति कहते है।

प्रदूषण और कारणों के प्रकारः

प्रदूषण को मोटे तौर पर निम्नलिखित श्रेणियों में वर्गीकृत किया जा सकता है –

वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण पर्यावरण में मौजूद हानिकारक और जहरीली गैसों की उपस्थिति को संदर्भित करता है। कार्बन मोनोऑक्साइड, कार्बन डाइऑक्साइड आदि जहरीली गैसों से निकलने वाले जीवाश्म ईंधन की खपत वायु प्रदूषण में योगदान करने वाला प्रमुख कारण मनुष्यों ने ऑटोमोबाइल का आविष्कार किया है, कारखानों की स्थापना की है, सड़कों और शहरों के लिए रास्ता बनाने के लिए जंगलों को काट दिया है। सभी पर्यावरणीय स्वास्थ्य से समझौता करते हैं।

ध्वनि प्रदूषण

ध्वनि प्रदूषण पर्यावरण में अवांछित ध्वनि की उप. स्थिति को संदर्भित करता है जो मनुष्यों और जानवरों की गतिविधियों पर हानिकारक प्रभाव डालता है। ध्वनि प्रदूषण के कुछ प्रमुख योगदान परिवहन वाहन, निर्माण कार्य, लाउड म्यूजिक आदि हैं।

मिट्टी प्रदूषण

मृदा प्रदूषण मानव निर्मित रसायनों और प्रदूषकों को मिट्टी में मिलाने, इसे विषाक्त बनाने और उपज को कम करने का कारण होता है। मृदा प्रदूषण के मुख्य कारणों में कृषि उद्योग द्वारा कीटनाशकों का उपयोंग, औद्योगिक अपशिष्ट निपटान, कूड़े और अनुचित अपशिष्ट निपटान सम्मिलित हैं। अनेक औद्योगीकरण ने वायु और जल प्रदूषण को बढ़ावा दिया है, जिससे पर्यावरणीय स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। जल संसाधनों और मिट्टी के गिरते स्वास्थ्य के लिए एक और सबसे आम कारक है – कूड़ा। विभिन्न स्थानों पर कूड़े के निस्तारण और अज्ञानता के अपर्याप्त तंत्र के परिणामस्वरूप ऐसा होता है। कूड़े के माध्यम से प्रदूषण का सबसे आम प्रकार प्लास्टिक है। विभिन्न आयामों के पतले प्लास्टिक बैग, जब ठीक से निपटाए नहीं जाते यह या तो जल निकायों में जाते हैं या मिट्टी में समाहित हो जाते हैं।

प्रकाश प्रदूषण

प्रकाश प्रदूषण को फोटो प्रदूषण भी कहा जाता है और यह रात में पर्यावरण में मानव निर्मित प्रकाश की उपस्थिति को संदर्भित करता है। प्रकाश प्रदूषण का मुख्य कारण अत्यधिक और गैर जरूरी प्रकाश की व्यवस्था है। प्रकाश प्रदूषण पर्यावण को बाधित करता है और इसकी सुन्दरता को कम करता है। कुछ पक्षी प्रजातियों को अत्यधिक प्रकाश व्यवस्था से भ्रमित होने के लिए जाना जाता है।

ऊष्मीय प्रदूषण

थर्मल प्रदूषण परिवेश पानी के तापमान में अचानक परिवर्तन को सन्दर्भित करता है। थर्मल प्रदूषण के प्रमुख कारणों में से एक है बिजली संयंत्रों और उद्योगों द्वारा शीतलक के रूप में पानी का उपयोग। शीतलक के रूप में उपयोग किया जाने वाला पानी गर्म हो जाता है और जब इसे प्राकृतिक वातावरण में लौटाया जाता है, तो इसका परिणाम अचानक तापमान में परिवर्तन, ऑक्सीजन सामग्री में कमी और परिस्थितिकीय तंत्र को प्रभावित करता है।

जल प्रदूषण

जल प्रदूषण का तात्पर्य मानव गतिविधियों द्वारा जल निकायों के दूषित होने से है। जल प्रदूषण का प्रमुख कारण औद्योगिक अपशिष्ट निपटान, सीवेज निपटान और कूड़े से हैं। हानिकारक और जहरीले रसायनों वाले औद्योगिक कचरे को जल निकायों में डाला जाता है, जिससे उनका प्रदूषण होता है। इसके अलावा, जल निकायों में और उसके आसा–पास कूड़े डालने से उनका प्रदूषण होता है और पानी उपयोग के लिए खतरनाक हो जाता है। औद्योगिक अपशिष्ट जिसमें एस्बेस्टस आदि जैसे जहरीले रसायन शामिल हैं, न केवल हमारे प्राकृतिक जल संसाधनों को प्रदूषित करता है बल्कि प्रजतियों, पौधों और शैवाल की गिरावट में भी जिम्मेदार है। उद्योगों को संचालित करने के लिए अच्छी मात्रा में पानी की आवश्यकता होती है और इसलिए मुख्य रूप से प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होने वाली धारा, नदी या जल निकाय के निकटता में स्थापित होते हैं।

रेडियोधर्मी प्रदूषण

रेडियोधर्मी प्रदूषण से तात्पर्य पर्यावरण में रेडियोधर्मी पदार्थों की उपस्थिति से है। ऐसे रेडियोधर्मी पदार्थ मानव स्वास्थ्य और पर्यावरण पर खतरनाक प्रभाव डालते हैं। रेडियोधर्मी प्रदूषण की ओर ले जाने वाले कारक अक्षम परमाणु अपशिष्ट हैंडलिंग, परमाणु विस्फोट और परमाणु दुर्घटनाएं हैं।

पर्यावरण की विशेषताएं:

1. पर्यावरण भौतिक तत्वों का समूह या तत्व समुच्चय होता है।
2. भौतिक पर्यावरण अपार शक्ति का भण्डार है।
3. पर्यावरण विशिष्ट भौतिक क्रिया कार्यरत रहती है।
4. पर्यावरण का प्रभाव प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनो रूपों में पड़ता है।
5. पर्यावरण परिवर्तनशील होता है।
6. पर्यावरण में क्षेत्रीय विविधता होती है तथा यह संसाधनों का भण्डार है।

समाधान के तरीके:

सख्त पर्यावरण नीतियां और बड़ी जन–जागरूकता आगे पर्यावरणीय क्षति को रोकने की कुंजी है। उद्योगो को अपने कार्बन पदचिन्ह को कम करने की दिशा में आवश्यक कदम उठाने के लिए बाध्य करना अनिवार्य है। इसके अलावा, किसी भी उल्लंघन को कड़ाई से जुर्माना लगाने और बन्द करने से निपटा जाना चाहिए। हानिकारक अपशिष्ट को हमारे जल निकायों और मिट्टी तक पहुंचाने से रोकने के लिए कुशल संग्रह और निपटान तंत्र की भी आवश्यकता होती है। प्रदूषण को नियंत्रित करने के कुछ सर्वोत्तम तरीके हैं – पर्यावरण के अनुकूल परिवहन विकल्प, कुशल अपशिष्ट संग्रह और निपटान, प्लास्टिक उत्पादों का उपयोग न करना, नियंत्रित मानव आबादी, वन रोपण और उद्योगों की स्थापना को नियंत्रित करने वाली वैश्विक नीति और उनके कार्बन फुट प्रिंट को विनियमित करना।

निष्कर्ष:

सरकार ने पर्यावरण की सुरक्षा के लिए बहुत से कानून पास किए है, जिससे पर्यावरण की सुरक्षा भी की जाए। केंद्रीय सरकार के अन्तर्गत पर्यावरण की सुरक्षा के लिए एक मंत्रालय कार्यरत है। इन सबसे महत्वपूर्ण है – प्रदूषण के मुददे पर आम जनता की जागरूकता को बढ़ाना चाहिए। लोगों को इस तथ्य को स्वीकार करना चाहिए कि प्रदूषण और ग्रह और उसके पूरे जीवित प्रजातियों के जीवन को बचाने के लिए एक समाधान खोजना, अंततः मनुष्य ही कर सकता है। साथ ही, इस पर एक साथ काम नहीं करना एक गलती होगी। एक स्थान पर प्रदूषण से कुछ दूर के स्थान पर जीवन को खतरा होता है, इसलिए विश्व स्तर पर प्रदूषण को एक साथ मिलकर निपटाया जाना चाहिए।